SUBJECT WISE SYLLABUS

अर्थशास्त्र

भाग ए

परिचयात्मक सूक्ष्म अर्थशास्त्र और वृहद अर्थशास्त्र

1. परिचय:

अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएँ, उत्पादन संभावना वक्र और अवसर लागत।

2. उपभोक्ता व्यवहार और माँग:

उपभोक्ता संतुलन - उपयोगिता दृष्टिकोण और उदासीनता दृष्टिकोण के माध्यम से संतुलन का अर्थ और प्राप्ति, माँग, बाज़ार की माँग, माँग के निर्धारक, माँग वक्र, माँग वक्र के साथ गति और बदलाव। माँग का नियम और इसके अपवाद। माँग की कीमत लोच, माँग की कीमत लोच का मापन - प्रतिशत, कुल व्यय और ज्यामितीय विधि।

3. उत्पादक व्यवहार और आपूर्ति:

उत्पादन के एजेंट। उत्पादन कार्य। लागत और राजस्व - अर्थ और विभिन्न प्रकार की लागतें और राजस्व। आइसोक्वेंट। एक कारक पर रिटर्न और पैमाने पर रिटर्न। आपूर्ति, बाज़ार की आपूर्ति, आपूर्ति के निर्धारक, आपूर्ति वक्र, आपूर्ति वक्र के साथ गति और बदलाव, आपूर्ति की कीमत लोच और इसका मापन। वितरण के घटक और सिद्धांत। कल्याण अर्थशास्त्र: पैरेटोइष्टतमता, निजी और सामाजिक उत्पाद। उपभोक्ता अधिशेष।

4. बाजार और मूल्य निर्धारण के रूप:

बाजार के रूप - अर्थ और विशेषताएं। पूर्ण प्रतिस्पर्धा, एकाधिकार और अपूर्ण प्रतिस्पर्धा के तहत मूल्य निर्धारण, मांग और आपूर्ति में बदलाव के प्रभाव।

5. राष्ट्रीय आय और संबंधित समुच्चय:

समष्टि अर्थशास्त्र: अर्थ। आय का चक्रीय प्रवाह, जीडीपी, जीएनपी, एनडीपी, एनएनपी (बाजार मूल्य और कारक लागत पर) की अवधारणाएं, राष्ट्रीय प्रयोज्य आय, निजी आय, व्यक्तिगत आय और व्यक्तिगत प्रयोज्य आय। राष्ट्रीय आय का मापन।

6. आय और रोजगार का निर्धारण:

कुल मांग, कुल आपूर्ति और उनके घटक। उपभोग की प्रवृत्ति और बचत की प्रवृत्ति। अनैच्छिक बेरोजगारी और पूर्ण रोजगार। आय और रोजगार का निर्धारण। निवेश गुणक की अवधारणा और इसकी कार्यप्रणाली। अतिरिक्त और कमी वाली मांगों की समस्याएँ अतिरिक्त और कमी वाली मांगों को ठीक करने के उपाय - ऋण की उपलब्धता, सरकारी खर्च में बदलाव। मुद्रास्फीति: अर्थ, कारण और उपाय

7. धन और बैंकिंग:

धन - अर्थ, विकास और कार्य। केंद्रीय बैंक - अर्थ और कार्य। वाणिज्यिक बैंक - अर्थ और कार्य। भारतीय बैंकिंग प्रणाली में हाल के महत्वपूर्ण सुधार और मुद्दे- निजीकरण और आधुनिकीकरण

8. सरकारी बजट और अर्थव्यवस्था:

सरकारी बजट - अर्थ और इसके घटक। सरकारी बजट के उद्देश्य। प्राप्तियों का वर्गीकरण; व्यय का वर्गीकरण। बजट के प्रकार। राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटा और प्राथमिक घाटा: अर्थ और निहितार्थ; विभिन्न घाटे को नियंत्रित करने के उपाय। सरकार की भूमिका को कम करना।

9. भुगतान संतुलन:

विदेशी विनिमय दर- अर्थ (स्थिर और लचीला), गुण और दोष; मांग और आपूर्ति के माध्यम से निर्धारण। भुगतान संतुलन खाते - अर्थ और घटक

10. अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, मुक्त व्यापार और संरक्षण के सिद्धांत, आईएमएफ - विश्व बैंक और उसके सहयोगी। विश्व व्यापार संगठन।

11. शेयर, डिबेंचर, सेबी, एनएसईडब्ल्यू, बीएसई और विभिन्न सूचकांकों की अवधारणाएँ।

भाग-बी

सांख्यिकी और भारतीय आर्थिक विकास

1. आंकड़ों का परिचय और संग्रह, संगठन:

अर्थशास्त्र में सांख्यिकी का अर्थ, दायरा और महत्व। आंकड़ों का संग्रह और संगठन। भारत की जनगणना और राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन। सांख्यिकीय उपकरण और व्याख्या: केंद्रीय प्रवृत्ति के उपाय। ज्यामितीय माध्य और हार्मोनिक माध्य। फैलाव के उपाय। लोरेंज वक्र: अर्थ और इसका अनुप्रयोग। सहसंबंध - अर्थ। सहसंबंध के उपाय - कार्ल पियर्सन की विधि, स्पीयरमैन का रैंक सहसंबंध। समय श्रृंखला विश्लेषण। सूचकांक संख्याओं का परिचय - अर्थ, प्रकार - थोक मूल्य सूचकांक, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक और औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक, सूचकांक संख्याओं का उपयोग; मुद्रास्फीति और सूचकांक संख्याएँ।

2. विकास नीतियाँ और अनुभव:

स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति का संक्षिप्त परिचय। पंचवर्षीय योजनाओं के सामान्य लक्ष्य, भारत में नियोजन पर प्रमुख विवाद। कृषि, उद्योग और विदेशी व्यापार की मुख्य विशेषताएँ, समस्याएँ और नीतियाँ।

3. 1991 से आर्थिक सुधार:

आवश्यकता और मुख्य विशेषताएँ - उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण; एलपीजी नीतियों का मूल्यांकन

4. भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने मौजूदा चुनौतियाँ:

गरीबी और गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रम। ग्रामीण विकास: मुख्य मुद्दे - ऋण और विपणन - सहकारी समितियों की भूमिका; कृषि विविधीकरण; वैकल्पिक खेती - जैविक खेती। मानव पूंजी निर्माण। भारत में शिक्षा क्षेत्र का विकास। रोजगार: अवसर और अन्य संबंधित मुद्दे। बुनियादी ढाँचागत समस्याएँ और नीतियाँ। सतत आर्थिक विकास: अर्थ; संसाधनों और पर्यावरण पर आर्थिक विकास के प्रभाव।

5. भारत का विकास अनुभव :

पड़ोसी देशों भारत और पाकिस्तान, भारत और चीन के साथ तुलना, मुद्दे: विकास, जनसंख्या, क्षेत्रीय विकास और अन्य विकासात्मक संकेतक।